मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य में दलित साहित्य

संगम वर्मा

तथागत बुद्ध ने समाज में नई चेतना और वैचारिक क्रान्ति का संचार किया, जिसके परिणामस्वरूप चिन्तन की प्रक्रिया नये सिरे से प्रारम्भ हुई। 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की अवधारणा का सूत्रापात तथागत बुद्ध ने किया। 'बहुजन' शब्द पालि भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है ज्यादा से ज्यादा लोग। गौतम बुद्ध ने इस अवधारणा का प्रवर्तन ज्यादा से ज्यादा लोगों के हित और सुख को सामने रख कर किया अर्थात् सभी के सुख समृद्धि और कल्याण की परिकल्पना बुद्ध ने की इनका बहुजनवादी विमर्श बन्धुत्व और मैत्री का सपना था। 'अवधारणा' का अर्थ है अच्छी तरह से सोच-विचार करके कोई निश्चय करना तथा अच्छी तरह से सोच-विचार करके कोई परिणाम निकालना। विमर्श का अर्थ भी विचार और चिन्तन ही होता है। बहुजनवादी विमर्श बुद्ध, अशोक, फुले, शाहू, अम्बेडकर से होता हुआ 20वीं शताब्दी में साहब काशी राम तक पहुँचा यह अटल सत्य है कि बहुजनवादी सोच के प्रवर्तक तथागत बुद्ध हैं लेकिन समकालीन समय में इस अवधरणा को पुनर्जीवन साहब कांशी राम ने दिया इन्होंने 'बहुजन' शब्द का प्रयोग तथागत बुद्ध की समतावादी विचारधारा और बाबा साहब के मिशन को मद्देनजर रख कर किया। समकालीन समय में 'बहुजन' शब्द का प्रयोग समष्टिगत मूल्यों और हितों को सामने रख कर किया जा रहा है। तथागत बुद्ध ने बहुजन समाज के कल्याण और हित की कामना करते हुए 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का सन्देश दिया।

सब्बे सत्ता सुखी होन्तु, सब्बे होन्तु च खेमिनो।
सब्बे भद्राणि पस्सन्तु, मा कचि दुक्ख मागमा।।[1]

अर्थात् सभी सुखी रहें, सभी निरोगी रहें, सभी प्रसन्नचित रहें, किसी को कोई दुःख न हो। बुद्ध ने विश्व को समता और शान्ति का पैगाम दिया। बुद्ध ने कार्यकारण के सिद्धान्त के आधर पर बताया कि कुछ भी बिना कारण संभव नहीं है। प्रत्येक वस्तु, विचार, जीव, मान्यता, घटना और परम्परा इत्यादि का कोई न कोई कारण जरूर है। अगर गरीबी और पिछड़ापन है तो उसका भी कोई कारण है। अगर कोई दुःखी और सुखी है तो उसके पीछे भी निःसंदेह कोई न कोई वजह अवश्य है। तथागत ने उस ईश्वर की सत्ता को भी नकार दिया जिस पर जाति उत्पति का सिद्धान्त टिका हुआ है। कर्मफल के सिद्धान्त को खारिज करके उन्होंने दर्शन की दिशा को ही बदल दिया।

यथा पि एक पुत्तस्मिं पियस्मिं कुसलो सिया।
एवं सब्बेसु पाणेसु सब्बत्थ कुसलो सिया।।
चित्तं च सुसमाहितं विप्पसन्नमनाविलं।
अखिलं सब्बभूतेसु सो मग्गो ब्रह्मपत्तिया।।[2]

अर्थात् जिस प्रकार माता अपने प्रिय एकमात्रा पुत्रा के प्रति प्रेमभाव रखती है उसी प्रकार सर्वत्रा सभी प्रणियों के प्रति प्रेमभाव रखो सुसमाहित चित, बिलकुल प्रसन्न और निर्मल, सभी जीवों पर प्रेम करना ही ब्रह्मत्व की प्राप्ति का मार्ग है। बुद्ध ने प्रेम, अहिंसा, करुणा और मैत्री का संदेश देकर 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की अवधरणा को पुष्ट किया

यथा पि उदकं नाम कल्याणे पापके जने।
समं फरति सीतेन पवाहेति रजोमलं।।
तथेव त्वं पि अहिताहिते समं मेत्ताय भावये।
मेत्तापारमितं गन्त्वा सम्बोधिं पापुणिस्सति।।[3]

अर्थात् जिस प्रकार पानी धर्मी और पापी दोनों को ही समान रूप से शीतलता पहुँचाता है, दोनों के मैल को धैर्य देता है। उसी प्रकार से आप भी हित अहित दोनों के प्रति समान भाव और मैत्री पारमिता से सम्बोधित को प्राप्त करो

यथा अहं तथा एते यथा एते तथा अहं।
अत्तानं उपमं कत्वा न हणेय न घातये।।[4]

अर्थात् जैसा मैं हूँ वैसे ये प्राणी भी हैं, जैसे ये प्राणी हैं, वैसा मैं हूँ। इस प्रकार दूसरों को भी अपने समान जानकर न तो किसी की हिंसा करें और न किसी का वध करें। बौद्ध दर्शन बहुजनवादी विमर्श है, जिसमें समता, बंधुत्व, सामाजिक न्याय, अस्मिता बोध, सदाचार और मध्यम मार्गी विचारों की प्रधानता है। दलित समाज और साहित्य का लक्ष्य सम्मान की प्राप्ति है। अधिकारविहीन समाज अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत है। दलित साहित्य पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव है क्योंकि बौद्ध दर्शन समतावाद का पक्षधर है। इसलिए दलित साहित्य भी 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का पहाड़ा पढ़ाता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की अवधारणा को स्थापित करते हुए वर्णव्यवस्था का ड़टकर विरोध किया है। उन्होंने सवर्ण-अवर्ण मानसिकता वाले समाज से अपनी कविता 'तब तुम क्या करोगे' में सवाल पूछा है कि अगर व्यवस्था आपके लिए विपरीत हो जाए तब तुम्हारी निष्ठा क्या होगी?

जला दी जाये समूची सभ्यता तुम्हारी
नोच-नोच कर
फेंक दिए जायें
गौरवमय इतिहास के पृष्ठ तुम्हारे
तब तुम क्या करोगे?[5]

राजेश कुमार बौद्ध की कविता 'क्योंकि मैं' मानवतावाद का परिचय देती हुई बहुजनवाद का नारा बुलन्द करती है।

मैं सिर्फ मानव हूँ
इसलिए मैं
मानवता की बात करता हूँ
मैं सत्य को मानता हूँ
इसलिए सत्य को
ध्यान में रखकर लिखता हूँ।[6]

मोहनदास नैमिशराय ने भी अपनी कविता 'झाड़ू और कलम' में व्यवस्था परिवर्तन की माँग करते हुए आक्रोशित स्वर से जाति व्यवस्था का विरोध किया है।

आज परिवर्तन के लिए
तुम्हें अपने हाथ में झाड़ू लेना होगा
वह दिन जल्द आएगा
चेतना का सूरज उग चुका है।[7]

जयप्रकाश कर्दम की कविता 'धर्मग्रंथों को आग लगानी होगी' जाति एवं साम्प्रदायिक वैमनस्य को समाप्त करने तथा भ्रातृत्व और अखण्डता बढ़ाने का सन्देश देती है।

जो कर्मानुसार
फल देता है
और मोक्ष भी
वर्णों के अनुसार
जगानी होगी शुद्ध प्रज्ञा
ध्वस्त करने होंगे
विषमताओं के संरक्षण।[8]

जयप्रकाश कर्दम ने 'छप्पर' उपन्यास में भी समता और मानवतावाद की बात की है। उपन्यास का केन्द्रीय पात्रा चन्दन सबको इन्सानियत और मानवतावाद का पाठ पढ़ाता हुआ सामाजिक चेतना पैदा करता है। 'यदि समाज हमें समानता का दर्जा नहीं देता, वह हमें हमारे मनुष्यत्व के साथ स्वीकार नहीं करता, यह समाज का दोष है। समाज धर्म द्वारा प्रेरित और संचालित है, हमारी सामाजिक स्थिति धर्मिक आदेशों का ही परिणाम है। 'धर्म ग्रन्थ' ही हमारे शोषण और अत्याचार की जड़ें हैं। इन जड़ों को उखाड़ फेंकने की जरूरत है और उसके लिए जरूरी है कि लोग अधिक से अधिक पढ़ें ताकि इन धर्म ग्रंथों में निहित अन्याय और असमानता के दर्शन को समझ सकें तथा अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार कर सकें।[9] इसी प्रकार मोहनदास नैमिशराय का उपन्यास 'जख्म हमारे' समता, मैत्री और अहिंसा का पाठ पढ़ाता हुआ 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का सन्देश देता है। उपन्यास का पात्रा फकीर कहता है, 'मेरे बच्चो, तुम सभी कुछ सीखो।

इतिहास पढ़ो। पैगम्बर मोहम्मद ने तो सैनिकों तक को संतों, महिलाओं और बच्चों की हत्या न करने की सलाह दी थी। 'कुरान में कहा गया है कि जो भी किसी एक व्यक्ति की हत्या करता है वह संपूर्ण मानव जाति को मारता है और जो किसी को बचाने का नेक काम करता है वह सारे अवाम को बचाता है।'[10] इस संवाद में मानवतावाद का संदेश छिपा हुआ है।

शरण कुमार लिंबाले ने भी अपने उपन्यास 'हिन्दू' में जन कल्याण की भावना को बल दिया है। उपन्यास में वर्णन आता है, 'केवल राजनीतिक स्वतन्त्राता से जनता का कल्याण होगा, यह एक भ्रम है। एक बार हमने जनतांत्रिक प्रणाली स्वीकार की कि अधिकारों का विस्तार होना एक अपरिहार्य स्थिति है। दलितों को स्वतंत्रा और स्वाभिमानी बनाने की अगर सरकार की वास्तविक इच्छा हो और यहाँ के प्रशासनिक अध्किारी सेवाभाव से प्रेरित हो गए हों तभी दलितों को सामाजिक न्याय मिल सकेगा।' काशिनाथ पोलके ने कहा।

'स्वर्णों को चाहिए कि वे अपने इतिहास की ओर देखें। उन्हीं की भावनाएँ होती हैं और हमारी नहीं होती क्या? हजारों वर्षों से हमें तुच्छता से देखते हुए हमारी मानवीयता को अपमानित किया गया। हमें हिन्दू समाज में समान अध्किार चाहिए। ये अधिकार हम हिन्दू समाज में रहकर और जरुरत पड़ी तो इस तुच्छ हिन्दुत्व पर लात मारकर प्राप्त कर लेने वाले हैं।' सिद्धार्थ पगारे ने कहा।[11] यह संवाद सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास की माँग पर जोर देता है।

'मुम्बई कांड' शीर्षक ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी शान्ति, अहिंसा और मध्यम मार्ग पर चलने का सन्देश देती है। कहानी का मुख्य पात्रा सुमेर मुम्बई में हुए बाबा साहब की प्रतिमा के अपमान और गोली काण्ड में मारे गए दलितों का बदला महात्मा गाँधी की प्रतिमा का अनादर करके लेना चाहता है, मगर तभी उसके मन में विचार आता है, 'अरे! मैं यह क्या कर रहा हूँ। मुम्बई में किसी ने मेरे विश्वास पर चोट की और मैं यहाँ किस की आस्था पर चोट करने जा रहा हूँ। कुछ गाँधी को 'बापू' कहते हैं और कुछ अम्बेडकर को 'बाबा'। वहाँ 'बाबा' कहने वाले मारे गए, यहाँ 'बापू' कहने वाले मारे जा सकते हैं। 'बाबा' कहने वालों पर भी गाज गिर सकती है। जो भी हो मारे तो निर्दोष ही जाएँगे। 'नहीं, यह रास्ता न बुद्ध का है और न ही अम्बेडकर कों मैं एक गुनाह का बदला दूसरे गुनाह से नहीं लूँगा।'[12] इसी प्रकार 'जस तस भई सवेर' उपन्यास में शोषण और निर्धनता के दुष्चक्र को तोड़ने तथा सबको बराबरी और इज्जत-मान देकर मैत्रीपूर्ण माहौल बनाने की कामना करते हुए लेखक ने 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की अवधारणा का समर्थन किया है। उपन्यास में वर्णित है कि जब मेहनतकश वर्ग इस बात को समझ जायेगा कि उसकी महिलाओं की इज्जत-आबरू, शील और लज्जा को अपनी वासना पूर्ति का साध्न समझने वाले, उसका पेट काट कर उसका शोषण करने वाले, सामन्तवादी ऐशोआराम कर रहें हैं, उसका पेट काट कर रंगरलियां मना रहे हैं। जिस दिन गरीबी की परिभाषा और उसका कारण समझ आ जायेगा उसी दिन निर्धनता का दुष्चक्र टूट जायेगा। उसी

दिन मेहनतकश लोगों का शोषण बन्द हो जायेगा। इसलिए कार्ल मार्क्स ने कहा था कि दुनिया के मजदूरो एक हो जाओ क्योंकि तुम्हारे पास गुलामी की जंजीरों के अलावा खोने के लिए कुछ है ही नहीं।[13] सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में भी 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की अवधारणा को देखा जा सकता है। लेखिका वर्णन करती है कि आरक्षण का लाभ भी सारे दलित समाज को नहीं मिल पाया। शिक्षा, एकता और संघर्ष की कमी के कारण हम पिछड़े हैं। दलित समाज धर्म की घंटी बजाना छोड़कर जागृति और क्रांति की बात समझे तथा परिवर्तन का मार्ग अपनाये तो बेहतर है। गोहाना अग्नि कांड जैसी घटनाएं देश में होती रहती हैं। इतनी प्रताड़ना निम्न जाति के लोग सहते हैं। स्वर्णों द्वारा उन्हें भयभीत करते पीछे रहने के लिए उन्हें मजबूर किया जाता है। फिर भी जातिवादी लोग अपने न्याय को नहीं मानते। यह उनकी क्रूरता है। यह मानवता के खिलाफ व्यवहार है।

इस बात को सभी लोगों को समझना चाहिए। हिन्दू धर्म में रहकर छुआछूत की पीड़ा भोगने वाले दलित समाज के लोग जय वाल्मीकि और जय श्रीराम कहकर अपनी पीड़ा से मुक्ति नहीं पा सके। जब वे सामाजिक परिवर्तन आन्दोलन से जुडेगें तभी वे समता-समान, प्रगति-उन्नति पा सकेंगे। बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर ने सम्पूर्ण दलित समाज को एकता के सूत्रा में बाँधकर एक होने का संदेश दिया। एकता और संगठन से ही हम अपने अध्किार पा सकेंगे। शिक्षा, संघर्ष और संगठन ही सामाजिक समता पाने का अधिकार है। नई पीढ़ी शिक्षित और सक्षम बनेगी, तभी दलित आंदोलन सफल होगा, तभी दलित समाज प्रगति और परिवर्तन की राह पर चलकर समान पा सकेगा।[14]

बिलकुल ऐसा ही वर्णन शरण कुमार लिंबाले के उपन्यास 'हिन्दू' में आता है। दलितों को अज्ञानी किसने रखा? उनकी शिक्षा-दीक्षा, ज्ञानार्जन पर किन्होंने बंधन डाले थे? किन्होंने रोक लगाई थी? पिछले हजारों वर्षों से दलितों की अज्ञानता का गलत फायदा क्या हिन्दुओं ने नहीं उठाया? अगर हिन्दू दलितों को अज्ञानी न रखते तो दलित धर्मांतरण कभी करते। हिन्दू धर्म ने दलितों के ज्ञान का शोषण किया है। बाबा साहब ने दलितों को बौद्ध धर्म का मार्ग दिखाया है।[15]

दलित साहित्य सबके भले की माँग करता है। लोक कल्याण और समता की स्थापना ही इसका मुख्य ध्येय है। सामाजिक कल्याण का जो नारा तथागत बुद्ध का था वही नारा 'बहुजन हिताय, बहुजय सुखाय' दलित चिन्तन का है। इसलिए दलित साहित्य पर तथागत बुद्ध के विचारों की छाप स्पष्ट नजर आती है। भगवान दास ने लिखा है कि भटके हुए दलित समाज के लोग भी एक दिन जन कल्याण के मार्ग को अपनाने के लिए मजबूर हो जाएँगे और उस महापुरुष के शब्दों को समझेंगे जिसने 'शिक्षा, संगठन, संघर्ष और क्रान्ति' की बात कही है। क्योंकि सारे दुःखों का कारण यही है। इसी के आधर पर एक नई दुनिया का निर्माण हो सकेगा जिसमें सभी सुखी होंगे। जिसमें शांति, स्वतंत्राता, समानता, बंधुत्व और न्याय होगा तथा अंध विश्वास और अज्ञानता की जगह वैज्ञानिक सोच होगी। देवी-देवताओं पर विश्वास की जगह मनुष्य अपने पर विश्वास करना सीखे। लेने के लिए देना सीखे।

कोई किसी का गुलाम न हो, कोई किसी का मोहताज न हो। कोई जन्म से किसी पेशे से बँध न हो। किसी पेशे से ऊँच-नीच की भावना न बँधे हो। किसी व्यक्ति के अच्छे-बुरे होने का मापदण्ड जन्म और दौलत नहीं बल्कि मानवता से प्रेम, नैतिक स्तर, उसकी योग्यता और गुण हो। बहुजन का हित और बहुजन का सुख ही जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य हो। ऐसी दुनिया का निर्माण नहीं होना चाहिए जिसमें हर व्यक्ति दूसरे के दुख को दूर करना ही अपना परम कर्ताव्य समझे।[16] इस प्रकार परिशोध करने पर ज्ञात होता है कि दलित साहित्य पर 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का प्रभाव है। तथागत बुद्ध ने दलित चिन्तकों और लेखकों को समानता का मार्ग दर्शाया है। यही वजह है जो दलित साहित्य पर बौद्ध विचारों की प्रधानता है।

बिन्दु

[1]तथागत बुद्ध, सं भन्ते कांशी रत्न, पोस्टर, रैदास बौद्ध धम्म शिक्षा मिशन कुरूक्षेत्र हरियाणा, 2010

[2]तथागत बुद्ध, सं एस धम्मिक थेर, सद्धम्म मणिरतन, आनन्द बोधि प्रकाशन श्रावस्ती उ प्र, 1989, पृष्ठ 34

[3]तथागत बुद्ध, सं एस धम्मिक थेर, सद्धम्म मणिरतन, आनन्द बोधि प्रकाशन श्रावस्ती उ प्र, 1989, पृष्ठ 34

[4]तथागत बुद्ध, सं एस धम्मिक थेर, सद्धम्म मणिरतन, आनन्द बोधि प्रकाशन श्रावस्ती उ प्र, 1989, पृष्ठ 35

[5]ओमप्रकाश वाल्मीकि, सदियों का संताप, गौतम बुक सेन्टर दिल्ली, 2008, पृष्ठ 49-51

[6]राजेश कुमार बौद्ध, सं जयप्रकाश कर्दम, दलित साहित्य वार्षिकी, अकादमिक प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली, 2008, पृष्ठ130

[7]मोहनदास नैमिशराय, सं कँवल भारती, दलित निर्वाचित कविताएं, इतिहास बोध प्रकाशन इलाहाबाद, 2006, पृष्ठ 113

[8]जयप्रकाश कर्दम, गूंगा नहीं था मैं, सागर प्रकाशन दिल्ली, 2011, पृष्ठ 75

[9]जयप्रकाश कर्दम छप्पर, राहुल प्रकाशन दिल्ली, 2009, पृष्ठ 40

[10]मोहनदास नैमिशराय, जख्म हमारे, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 159

[11] शरण कुमार लिंबाले, हिन्दू, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 93

[12]ओमप्रकाश वाल्मीकि, घुसपैठिये, राधाऔ-ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 34, 35

[13]सत्यप्रकाश, जस तस भई सवेर, सागर प्रकाशन दिल्ली, 2006, पृष्ठ 46

[14]सुशीला टाकभौरे, शिकंजे का दर्द, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 254-256

[15]शरण कुमार लिंबाले, हिन्दू, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 111

[16]भगवान दास, मैं भंगी हूँ, गौतम बुक सेन्टर दिल्ली, 1997, पृष्ठ 120